

सूकर का स्वाइन फीवर से बचाव एवं रोकथाम

विजय चंद्रा, सत्येन्द्र कुमार, प्रदीप कुमार

परिचय:

सूअर पालन किसानों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, लेकिन संक्रामक रोगों के कारण कभी-कभी पूरे झुंड को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। स्वाइन फीवर सूअरों में होने वाले गंभीर संक्रामक रोगों में शामिल है। विशेष रूप से अफ्रीकन स्वाइन फीवर तेजी से फैल सकता है और संक्रमित झुंड में बहुत अधिक मृत्यु का कारण बन सकता है। इस रोग से बचाव का सबसे प्रभावी तरीका है जैव-सुरक्षा, संक्रमित सूअरों की समय पर पहचान और बीमारी की सूचना तुरंत पशु चिकित्सा विभाग को देना।

स्वाइन फीवर क्या है?

स्वाइन फीवर शब्द का प्रयोग सामान्य रूप से सूअरों में होने वाले कुछ गंभीर वायरल रोगों के लिए किया जाता है। इनमें क्लासिकल स्वाइन फीवर और अफ्रीकन स्वाइन फीवर प्रमुख हैं। इन दोनों रोगों के नाम और कुछ लक्षण एक जैसे हो सकते हैं, लेकिन इनके वायरस अलग होते हैं। इसलिए केवल लक्षण देखकर यह निश्चित नहीं किया जा सकता कि सूअर को कौन-सा रोग है। प्रयोगशाला जांच और पशु चिकित्सक की सलाह आवश्यक होती है। अफ्रीकन स्वाइन फीवर मनुष्यों में बीमारी पैदा नहीं करता,

लेकिन सूअरों के लिए अत्यंत गंभीर रोग है और इसका प्रकोप सूअर पालन करने वाले किसानों के लिए बड़ा आर्थिक नुकसान पैदा कर सकता है।

रोग कैसे फैलता है?

स्वाइन फीवर का वायरस संक्रमित सूअरों, उनके रक्त, शरीर के स्राव तथा दूषित वस्तुओं के माध्यम से फैल सकता है। रोग के प्रसार में निम्न कारण महत्वपूर्ण हो सकते हैं

- ☞ संक्रमित सूअर को स्वस्थ सूअरों के साथ रखना।
- ☞ संक्रमित सूअर के रक्त या शरीर के स्राव से संपर्क।
- ☞ दूषित जूते, कपड़े और उपकरण।
- ☞ दूषित वाहन या परिवहन के साधन।
- ☞ संक्रमित सूअर के मांस या मांस से बने उत्पादों का अनुचित उपयोग।
- ☞ संक्रमित सूअरों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।
- ☞ कुछ क्षेत्रों में जंगली सूअर से संपर्क।
- ☞ बिना सफाई किए दूसरे फार्म से लोगों या उपकरणों का आना-जाना।

विजय चंद्रा, सत्येन्द्र कुमार, प्रदीप कुमार

सह-प्राध्यापक (पशु विज्ञान),

विषय वस्तु विशेषज्ञ (पादप प्रजनन),

विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी),

कृषि विज्ञान केन्द्र, महाराजगंज,

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, 224229

स्वाइन फीवर के प्रमुख लक्षण

रोग के लक्षण संक्रमण की तीव्रता और वायरस के प्रकार के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। किसान को निम्न संकेतों पर विशेष ध्यान देना चाहिए

सामान्य लक्षण

- ❖ अचानक तेज बुखार
- ❖ भोजन और पानी में रुचि कम होना
- ❖ अत्यधिक कमजोरी और सुस्ती
- ❖ एक स्थान पर पड़े रहना
- ❖ सांस लेने में कठिनाई
- ❖ उल्टी या दस्त
- ❖ त्वचा पर लाल या बैंगनी रंग के धब्बे
- ❖ कान, पेट या पैरों पर असामान्य लालिमा
- ❖ चलने में परेशानी
- ❖ गर्भवती सूअरों में गर्भपात
- ❖ अचानक मृत्यु

महत्वपूर्ण कुछ मामलों में बीमारी इतनी तेजी से बढ़ सकती है कि स्पष्ट लक्षण दिखाई देने से पहले ही सूअर की मृत्यु हो सकती है। ये लक्षण अन्य बीमारियों में भी दिखाई दे सकते हैं। इसलिए केवल लक्षण देखकर स्वाइन फीवर की पुष्टि नहीं करनी चाहिए।

स्वाइन फीवर की रोकथाम कैसे करें?

1. नए सूअरों को तुरंत झुंड में न मिलाएं

नए खरीदे गए सूअरों को सीधे पुराने झुंड में रखने के बजाय उन्हें अलग स्थान पर रखकर उनकी निगरानी करनी चाहिए। यदि संभव हो तो क्वारंटाइन व्यवस्था अपनाएं और

पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार स्वास्थ्य जांच कराएं।

2. फार्म में बाहरी लोगों का प्रवेश सीमित करें

फार्म में जितने अधिक लोग और वाहन प्रवेश करेंगे, संक्रमण का जोखिम उतना ही बढ़ सकता है। इसलिए

- ❖ अनावश्यक लोगों को फार्म में प्रवेश न दें।
- ❖ बाहर से आने वाले व्यक्ति के लिए साफ जूते और कपड़ों की व्यवस्था करें।
- ❖ फार्म में प्रवेश और निकास का रिकॉर्ड रखना उपयोगी है।

3. जूते और कपड़ों की सफाई करें

एक फार्म से दूसरे फार्म पर जाने वाले व्यक्ति वायरस को अपने जूते, कपड़े या उपकरण के माध्यम से अनजाने में ले जा सकते हैं।

4. फार्म और उपकरणों को नियमित रूप से साफ करें

फर्श, बाड़े, उपकरण, पानी के बर्तन और अन्य सतहों को नियमित रूप से साफ करना चाहिए। पहले गंदगी और जैविक पदार्थ हटाएं, उसके बाद उपयुक्त कीटाणुनाशक का प्रयोग करें। केवल गंदे स्थान पर कीटाणुनाशक छिड़कना पर्याप्त प्रभावी नहीं हो सकता। कीटाणुनाशक की सही मात्रा और संपर्क समय के लिए उसके लेबल तथा पशु चिकित्सक की सलाह का पालन करें।

5. सूअरों को होटल या बचा हुआ भोजन न खिलाएं

रसोई या होटल से बचा हुआ ऐसा भोजन जिसमें संक्रमित सूअर का मांस या मांस उत्पाद शामिल हो, संक्रमण का स्रोत बन सकता है। इसलिए अज्ञात स्रोत का मांसयुक्त भोजन या बिना उचित उपचार का विवर्तन सूअरों को नहीं खिलाना चाहिए। यदि किसी क्षेत्र में पसस मिमकपदह पर स्थानीय प्रशासन ने प्रतिबंध या विशेष निर्देश दिए हों, तो उनका सख्ती से पालन करें।

6. सूअरों की अनावश्यक आवाजाही रोकें

बीमारी के प्रकोप के समय सूअरों को एक फार्म से दूसरे फार्म ले जाने से संक्रमण तेजी से फैल सकता है। यदि किसी सूअर में बीमारी के संदिग्ध लक्षण दिखाई दें, तो—उसे बाजार में बेचने या दूसरे फार्म में ले जाने के बजाय तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

7. मृत सूअर का उचित निपटान करें

मृत सूअर को खुले में फेंकना या नदी, तालाब अथवा खेत के पास छोड़ना गंभीर गलती है। इससे दूसरे सूअर, जंगली जानवर और अन्य माध्यम संक्रमण फैला सकते हैं। मृत पशु के निपटान की स्थानीय पशु स्वास्थ्य विभाग द्वारा निर्धारित सुरक्षित विधि अपनानी चाहिए।

8. सूअरों को जंगली सूअरों से दूर रखें

जहां जंगली सूअर मौजूद हों, वहां फार्म की बाड़ और प्रबंधन व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि घरेलू सूअरों का उनसे संपर्क न हो। विशेष रूप से खुले में सूअर पालने की व्यवस्था में संक्रमण का जोखिम बढ़ सकता है।

9. बीमार सूअर को अलग करें

यदि किसी सूअर में बुखार, कमजोरी, त्वचा पर लालध्वंगनी धब्बे, दस्त, उल्टी या

अचानक मृत्यु जैसे संकेत दिखाई दें तो उसे स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।

क्या स्वाइन फीवर का इलाज है?

अफ्रीकन स्वाइन फीवर के लिए वर्तमान में कोई व्यापक रूप से उपलब्ध प्रभावी उपचार नहीं है। इसलिए इसकी रोकथाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर, क्लासिकल स्वाइन फीवर अलग रोग है और इसके नियंत्रण के लिए टीकाकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए किसान को स्वयं से कोई इंजेक्शन या दवा देकर स्वाइन फीवर का इलाज करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। बीमारी की पहचान और उपचारनियंत्रण की रणनीति पशु चिकित्सक द्वारा तय की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

सूअर पालन में स्वाइन फीवर का प्रकोप किसान के लिए भारी आर्थिक नुकसान का कारण बन सकता है। इस बीमारी के नियंत्रण में झुलाज से बेहतर बचाव की नीति सबसे महत्वपूर्ण है। फार्म में अच्छी जैव-सुरक्षा व्यवस्था, नए पशुओं का उचित क्वारंटाइन, नियमित सफाई—कीटाणुशोधन, नियंत्रित पशु आवाजाही, सुरक्षित चारा एवं पानी और बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर तत्काल सूचनाकृये सभी कदम स्वाइन फीवर के खतरे को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।